श्रावक श्रीलालाजी रणजीत सिंघजी कृत

बृहदालोयणा.

ए पुस्तक

श्रावक भाइओने अवश्यवांचवा

भणवा योग्य जाणीने

श्रावक भीमसिंह माणेकें

श्रीमोहमयी मध्यें

निर्णयसागर प्रेसमां छपाव्युं.

संवत् १९४७ सने १८९१.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ पुण्यप्राभाविक श्रावक श्रीलालाजीरण जितसिंघजीकृत श्रीबृहदालोयणा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध श्रीपरमातमा । अरिगंजन अरिहंत ॥ इष्टदेव वंदूं सदा । भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध समरुं सदा । आचारज उवझाय ॥ साधु सकलके चरनकूं । वंदूं शीश नमाय ॥२॥ शासन नायक समरीयें । भगवंत वीर जिनंद ॥ अलिय विघन दूरें हरे । आपे परमानंद ॥ ३ ॥ अंगुठे अमृत वसे । लब्धि तणो भंडार । श्रीगुरु गौतम समरीयें । वंछित फल दातार ॥ ४ ॥ श्रीगुरु देव प्रसादसें । होत मनोरथ सिद्ध ॥ ज्युं घन वरसत वेलि तरु । फूल फलनकी वृद्ध ॥ ५ ॥ पंचपरमेष्टी देवको । भजनपुर पहीचान ॥ कर्मअरि भाजे सबी । होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥ श्रीजिनयुगपद कमलमें । मुज मन भमर वसाय ॥ कब ऊगे वो दिनकरू । श्रीमुख दरिसनपाय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥७॥ प्रणमी पदपंकज भनी । अरिगंजन अरिहंत ॥
कथन करौं अब जीवको । किंचित मुज विरतंत ॥८॥
आरंभ विषय कषाय वश । भमीयो काल अनंत ॥
लख चोराशी जोनिसें । अब तारो भगवंत ॥ ९ ॥ दे
व गुरु धर्म सूत्रमें । नवतत्त्वादिक जोय ॥ अधिका
ओछा जे कह्या । मिच्छा दुक्कड मोय ॥ १० ॥ मोह अ
ज्ञान मिथ्यात्वको । भरीयो रोग अथाग ॥ वैद्यराज
गुरु शरनथी । औषध ज्ञान वैराग ॥ ११ ॥ जे में जी
व विराधिया । सेव्यां पाप अढार ॥ प्रभु तुमारी सा
खसें । वार वार धिक्कार ॥ १२ ॥ बुरा बुरा सबको
कहे । बुरा न दीसे कोय ॥ जो घट शोधे आपनो ।
तो मोसुं बुरा न कोय ॥१३॥ कहेवामें आवे नही ।
अवगुण भर्या अनंत ॥ लिखवामें क्युं कर लिखुं ।
जानो श्रीभगवंत ॥ १४ ॥ करुणानिधि कृपा करी ।
कठिण कर्म मोय छेद ॥ मोह अज्ञान मिथ्यात्वको ।
करजो गंठी भेद ॥ १५ ॥ पतित उद्धारन नाथजी ।
अपनो बिरुद विचार ॥ भूल चूक सब माहरी । खमी
यें वारंवार ॥ १६ ॥ माफ करो सब माहरा । आ
ज तलकना दोष ॥ दीन दयाल देवो मुजे । श्रद्धा शी
ल संतोष ॥ १७ ॥ आतम निंदा शुद्ध भनी । गुनवं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त वंदन ज्ञाव ॥ रागद्वेष पतला करी। सबसें खिमत खिमाव ॥१८॥ छूटुं पिछला पापसें । नवा न बंधुं कोय ॥ श्रीगुरु देव प्रसादसें। सफल मनोरथ होय ॥१९॥ परिग्रह ममता तजी करी । पंच महाव्रत धार ॥ अंत समय आलोयणा। करुं संथारो सार ॥ २० ॥ तीन मनोरथ ए कह्या। जो ध्यावे नित्य मन्न ॥ शक्ति सार वरते सही। पावे शिवसुख धन्न ॥ २१ ॥ अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु । संवर निर्जर धर्म ॥ केवलिजाषित शासतर । एहि जैन मत मर्म ॥ २२ ॥ आरंज विषय कषाय तज। शुद्ध समकित व्रत धार ॥ जिन आज्ञा परमान कर । निश्चय खेवो पार ॥२३॥ क्षण निकमो रहनो नही। करनो आतम काम ॥ जणनो गुननो शीखनो। रमनो ज्ञान आराम ॥२४॥ अरिहंत सिद्ध सब साधुजी। जिन आज्ञा धर्मसार ॥ मंगलीक उत्तम सदा। निश्चय शरणां चार ॥ २५ ॥ घडी घडी पल पल सदा। प्रजु स्मरणको चाव ॥ नरज्ञव सफलो जो करे। दान शील तप ज्ञाव ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धां जैसो जीव है। जीव सोइ सिद्ध होय ॥ कर्म मेलका अंतरा । बूझे विरला कोय ॥ १ ॥ कर्म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुजल रूप हैं। जीव रूप है ज्ञान ॥ दो मिल कर ब
हु रूप है। विछड्यां पद निरवाण ॥ ३ ॥ जीव कर
म जिन्न जिन्न करो। मनुष्य जनमकूं पाय ॥ ज्ञानात
म वैराग्यसें। धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥ द्रव्यथकी
जीव एक है। क्षेत्र असंख्य प्रमान ॥ कालथकी सर्व
दा रहै। नावें दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥ गर्जित पुजल पिंम
में। अलख अमूरति देव ॥ फिरे सहज नवचक्रमें।
यह अनादिकी टेव ॥ ५ ॥ फूल अतर घी दूधमें। ति
लमें तैल त्रिपाय ॥ यूं चेतन जड करमसंग । बंध्यो
ममत दुःख पाय ॥ ६ ॥ जो जो पुजलकी दिशा।
ते निज माने हंस ॥ याही नरम विनावतें। बढे क
रमको बंस ॥ ७ ॥ रतन बंध्यो गठडी विषे। सूर्य त्रि
प्यो घनमांहि ॥ सिंह पिंजरामें दियो। जोर चले क
छु नांहि ॥ ८ ॥ ज्युं बंदर मदिरा पीयां। विछू मंकित
गात ॥ नूत लग्यो कौतुक करे। त्युं कर्मोंको उत्पात
॥ ए ॥ कर्म संग जीव मूढ है। पावे नाना रूप ॥
कर्मरूप मलके टले। चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥ शु
द्ध चेतन उज्ज्वल दरव। रह्यो कर्म मल छाय ॥ त
प संयमसें धोवतां। ज्ञान ज्योति बढ जाय ॥ ११ ॥
ज्ञानथकी जाने सकल। दर्शन श्रद्धा रूप ॥ चारित्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थी आवत रुके। तपस्या कृपन सरूप ॥ १२ ॥ क
र्मरूप मलके शुधे। चेतन चांदी रूप ॥ निर्मल ज्यो
ति प्रगट नयां। केवल ज्ञान अनूप ॥ १३ ॥ मूसी
पावक सोहगी। फूंकांतनो उपाय ॥ राम चरण चारु
मल्यां। मैल कनकको जाय ॥ १४ ॥ कर्मरूप बाद
ल मिटे। प्रगटे चेतन चंद ॥ ज्ञानरूप गुन चांदनी।
निर्मल ज्योति अमंद ॥ १५ ॥ राग द्वेष दो बीजसें।
कर्म बंधकी व्याध ॥ ज्ञानातम वैराग्यसें। पावै मुक्ति
समाध ॥ १६ ॥ अवसर बीत्यो जात है। अपने ब
स कछु होत ॥ पुण्य छतां पुण्य होत है। दीपक दीप
क ज्योत ॥ १७ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि। इन नवमें
सुखकार ॥ ज्ञान वृद्धि इनसें अधिक। नवसुख नंज
नहार ॥ १८ ॥ राइ मात्र घट वध नही। देख्यां के
वल ज्ञान ॥ यह निश्चय कर जानके। त्यजीयें परथ
म ध्यान ॥१९॥ दूजा कुछबि न चिंतियें। कर्मबंध ब
हु दोष ॥ त्रीजा चोथा ध्यायके। करियें मन संतोष
॥ २० ॥ गइ वस्तु सोचे नही। आगम वंछा नांहि
॥ वर्त्तमान वर्त्ते सदा। सो ज्ञानी जगमांहि ॥ २१ ॥
अहो समदृष्टि जीवडा। करे कुटुंब प्रतिपाल ॥ अं
तर्गत न्यारो रहे। ज्युं धाइ खिलावे बाल ॥ २२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुख दुःख दोनुं वसत है। ज्ञानीके घटमांहि ॥ गि रिसर दीखे मुकरमें। नार बोजवो नांहि ॥ २३ ॥ जो जो पुन्न फरसना । निश्चे फरसे सोय ॥ ममता स मता नावसे। करमबंध खय होय ॥२४॥ बांध्या सो ही नोगवे । कर्मशुनाशुन नाव ॥ फल निर्जरा होत है। यह समाधि चित्त चाव ॥ २५ ॥ बांध्या बिनशु गते नही । बिन शुगत्यां न बुडाय ॥ आपही करता नोगता। आपही दूर कराय ॥ २६ ॥ पथ कुपथ घ ट वध करी । रोग हानि वृद्धि थाय ॥ युं पुण्य पाप किरिया करी। सुख दुख जगमें पाय ॥ २७ ॥ सुख दीयां सुख होत है । दुख दीया दुख होय ॥ आप हणे नही अवरकूं। तो अपने हणे न कोय ॥ २८ ॥ ज्ञान गरीबी गुरु बचन । नरम वचन निर्दोष ॥ इन कुं कबी न बांमीयें। श्रद्धा शील संतोष ॥ २ए ॥ स त मत बोडो हो नरा। लक्ष्मी चौगुनी होय ॥ सुख दुख रेखा कर्मकी। टाली टले न कोय ॥ ३० ॥ गो धन गजधन रत्नधन । कंचन खान सुखान ॥ जब आ वे संतोष धन। सब धन धूल समान ॥ ३१ ॥ शील रतन महोटो रतन। सब रतनांकी खान ॥ तीन लो ककी संपदा। रही शीलमें आन ॥ ३२ ॥ शालें सर्प

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न आलडे । शीलें शीतल आग ॥ शीलें अरि करि के
सरी । लय जावे सब लाग ॥ ३३ ॥ शील रतनके पा
रखुं । मीठा बोले बैन ॥ सब जगसें उंचा रहे । जो
नीचा राखे नैन ॥ ३४ ॥ तन कर मन कर वचन
कर । देत न काहु दुःख ॥ कर्म रोग पातक जरे ।
देखत वाका मुख ॥ ३५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पान खरंते इम कहे । सुन तरुवर वनराय ॥
अबके बिछुरे कब मिलें । दूर पडेंगे जाय ॥ १ ॥
तब तरुवर उत्तर दीयो । सुनो पत्र एक बात ॥ इस
घर एही रीत है । एक आवत एक जात ॥ २ ॥ वर
स दिनाकी गांठको । उछव गाय बजाय ॥ मूरख न
र समजे नही । वरस गांठको जाय ॥ ३ ॥

॥ सोरठो ॥

॥ पवन तणो विश्वास । किण कारण तें दृढ की
यो ॥ इनकी एही रीत । आवे के आवे नही ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ करज बिरानां काढके । खरच किया बहु नाम
॥ जब मुदत पूरी हूवे । देनां पडशे दाम ॥ ५ ॥ बि
छुं डीयां छूटे नही । यह निश्चय कर मान ॥ हस ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सके क्युं खरचियें । दाम बिराना जान ॥ ६ ॥ जीव हिंसा करतां थकां । लागे मिष्ट अज्ञान ॥ ज्ञानी ज्म जाने सही । विष मिलियो पकवान ॥ ७ ॥ काम भो ग प्यारा लगे । फल किंपाक समान ॥ मीठी खाज खुजावतां । पीछें दुखकी खान ॥ ८ ॥ जप तप सं जम दोहिलो । औषध कडवी जान ॥ सुख कारन पीछें घनो । निश्चय पद निरवान ॥ ए ॥ मानअणी जल बिंदुवो । सुख विषयनको चाव ॥ भव सागर दुख जल भखो । यह संसार स्वभाव ॥ १० ॥ चढ उत्तंग जहांसें पतन । शिखर नहीं वो कूप ॥ जिस सुख अंदर दुख वसे । सो सुखभी दुख रूप ॥ ११ ॥ जब लग जिसके पुण्यका । पहोचे नही करार ॥ तब लग उसकों माफ है । अवगुन करे हजार ॥ १२ ॥ पुण्य खीन जब होत है । उदय होत है पाप ॥ दा जे बनकी लाकरी । प्रजले आपो आप ॥ १३ ॥ पा प छिपाया नां छिपे । छिपे तो महोटा भाग ॥ दाबी दुबी नां रहे । रुइ पलेटी आग ॥ १४ ॥ बहू बीती थोडी रही । अब तो सुरत संभार ॥ परभव निश्चय चालनो । वृथा जन्म मत हार ॥ १५ ॥ चार कोश ग्रामांतरें । खरची बांधे लार ॥ परभव निश्चय जाव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णो । करियें धर्म बिचार ॥ १६ ॥ रज विरज उंची गई । नरमाइके पान ॥ पन्नर ठोकर खात है । करडाइके तान ॥ १७ ॥ अवगुन उर धरियें नही । जो हुये विरष बबूल ॥ गुन लीजें काजू कहै । नही छायामें सूल ॥ १८ ॥ जैसी जापें वस्तु है । वैसीदे दिखलाय ॥ वाका बुरा न मानीयें । वो लेने कहांसें जाय ॥ ॥ १ए ॥ गुरु कारीगर सारिखा । टांची वचन विचार ॥ पन्नरसें प्रतिमा करे । पूजा लहे अपार ॥ २० ॥ संतनकी सेवा कियां । प्रभु रीजत है आप ॥ जाका बाल खिलाइयें । ताका रीजत बाप ॥ २१ ॥ नवसागर संसारमें । दीपा श्रीजिनराज ॥ उद्यम करी पहोंचे तिरें । बैठी धर्म जहाज ॥ २२ ॥ निज आतमकूं दमन कर । पर आतमकूं चीन ॥ परमातमको भज न कर । सोई मत परवीन ॥ २३ ॥ समजु शंके पापसें । अण समजु हरषंत ॥ वे लूखां वे चीकणां । इण विध कर्म बधंत ॥ २४ ॥ समज सार संसारमें । समजु टाले दोष ॥ समज समज करी जीवहीं । गया अनंता मोक्ष ॥ २५ ॥ उपशम विषय कषायनो । संबर तीनुं योग ॥ किरिया जतन विवेकसें । मिटै कुकर्म दुखरोग ॥ २६ ॥ रोग मिटे समता वधे ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

समकित व्रत आराध ॥ निर्वैरी सब जीवको । पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥ इति ॥ नूल चुक मिछामि दु क्कडं ॥ इति श्रावक लालाजी रणजित सिंहजीकृत दो हा संपूर्ण ॥ श्री पंचपरमेष्ठिनगवन्नयोनमः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सि६ श्रीपरमातमा ॥ अरिगंजन अरिहंत । इष्ट देव वंदूं सदा । नयनंजन नगवंत ॥१॥ अनंत चोवीशी जिन नमुं । सि६ अनंता कोड ॥ वर्त्तमान जिनवर सवे । केवली दो कोडी नवकोड ॥ २ ॥ गणधरादिक सर्व साधुजी । समकितव्रत गुणधार ॥ यथायोग्य वंदन करुं । जिन आज्ञा अनुसार ॥ ३ ॥ प्रथम एक नव कार गुणनो ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचपरमेष्टी देवनो । नजन पुर पहिचान ॥ कर्म अरि नाजे सन्नी । शिवसुख मंगल थान ॥ ४ ॥ अरि हंत सि६ समरुं सदा । आचारज उवझाय ॥ साधु सकलके चरनकुं । बंदू शीश नमाय ॥ ५ ॥ शासन नायक समरियें । वर्६मान जिनचंद ॥ अलिय विघन दूरें हरे । आपे परमानंद ॥६॥ अंगुठे अमृत वसे । ल ब्धि तणा नंमार ॥ जे गुरु गौतम समरियें । मन वं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छितफल दातार ॥ ७ ॥ श्रीजिन युग पदकमलमें । मु
ज मन अलिय वसाय ॥ कब ऊगेवो दिनकरु । श्री
मुख दरिसन पाय ॥ ८ ॥ प्रणमी पदपंकजभनी । अ
रिगंजन अरिहंत ॥ कथन करुं ह्वे जीवनुं । किंचित
मुज विरतंत ॥९॥ अंजनाकी देशी ॥ हुं अपराधि अ
नादिको । जनम जनम गुना किया भरपूर के ॥ लूं
टीयां प्राण छकायनां । सेवियां पाप अढारां करूरके
॥ श्रीमुख० ॥ १० ॥ १ ॥ आज तांइ इनभवमें पहे
लां संख्याता असंख्याता अनंता भवमें, कुगुरु कुदेव
अरु कुधर्मकी सद्दहणा परूपना फरसना सेवनादिक
संबंधी पाप दोष लाग्या ते मिछामि डुक्कडं ॥२॥ मैनें अ
ज्ञानपणे मिथ्यात्वपणे अव्रतपणे कषायपणे अशुभ
योगें करी प्रमादें करी अपछंदा अविनीतपणां कस्यां
॥ ३ ॥ श्री श्रीअरिहंत भगवंत वीतराग केवल ज्ञानी
महाराजजीकी श्री गणधरदेवजीकी आचारजमहारा
जजीकी श्री धर्माचारजजी महाराजजीकी श्री उपा
ध्यायजीकी,अने साधुजीकी आर्याजी महाराजकी श्रा
वक श्राविकाजीकी समदृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषांकी
शास्त्र सूत्रपाठकी अर्थ परमार्थकी धर्मसंबंधि सकल
पदार्थोंकी अविनय अभक्ति आशातनादिक करी, क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राइ अनुमोदी मन वचन कायायें करी द्रव्यथी क्षेत्र थी कालथी भावथी सम्यक् प्रकारें विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमें नही करी, नहि करावी, नहिं अनुमोदी ते मुजे धिक्कार धिक्कार, वारंवार मिछामि दुक्कडं ॥ मेरी भूल चूक अवगुन अपराध सब माफ करो बक्शो मुजे में खमावूं मन वचन कायायें करी ॥

॥ दोहा ॥

॥ में अपराधी गुरु देवको । तीन भवनको चोर ॥ छगुं विराणा मालमें । हाहा कर्म कठोर ॥ १ ॥ कामी कपटी लालची । अपढंदा अविनीत ॥ अविवेकी क्रोधी कठिण । महापापी रणजीत ॥ २ ॥ (आंही वाचनारे आप आपका नाम कहेना.) जे में जीव विराधिया । सेव्यां पाप अढार ॥ नाथ तुमारी साख सें । वारं वार धिक्कार ॥ ३ ॥ मैनें छक्कायपने छही कायकी विराधना करी । पृथिवीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय बेंद्रिय तेंद्रिय चौरिंद्रिय पंचेंद्रिय सन्नी असन्नी गर्भज । चौदे प्रकारें समूर्छिम प्रमुख त्रस थावर जीवांकी विराधना करी करावी अनुमोदी मन वचन कायायें करी उठतां बेसतां सू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वतां हालतां चालतां शस्त्र वस्त्र मकानादिक उपकर णें करी उठावतां धरतां लेतां देतां वर्त्ततां वर्तावतां अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा संबंधि अप्रमार्ज्जना दुःप्रमार्ज्जना संबंधी अधिकी उणी विपरीत पुंजना प डिलेहणा संबंधी और आहार विहारादिक नाना प्र कारका घणा घणा कर्त्तव्योमां संख्याता असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनंता जीवका जितना प्राण लूंट्या ते सर्व जीवांका में पापी अपराधी हुं। निश्चें करी बदलाका देणहार हूं, सर्व जीव मुजप्रतें माफ करो मेरी चूल चूक अवगुन अपराध सब माफ करो देवसी राइसी पखी चौमासी अने सांवत्सरिक संबं धि वारं वार मिछामि दुक्कडं वारं वार में खमाउं हुं. तुमें सर्वे खमजो. खामेमि सव्वजीवा, सव्वे जीवा ख मंतु मे ॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मझं न केणइ ॥ ॥ १ ॥ १॥ वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन में छही कायका वैर बदलासें निवर्त्तुंगा । सर्व चोराशी लाख जीवायोनिकूं अभयदान देउंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख दीया सुख होत है । दुःख दिया दुख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होय ॥ आप हणे नहीं अवरकूं । आपकुं हणे न कोय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ दूजा पाप मृषावाद सो जूठ बोल्या ॥ क्रो धवशें मानवशें मायावशें लोनवशें हास्यें करी नय वशें इत्यादि मृषा वचन बोल्या ॥ २ ॥ निंदा विकथा करी कर्कश कठोर मरमकी नाषा बोली इत्यादिक अ नेक प्रकारें मृषावाद जूठ बोल्या बुलाया बोलतांनें अ नुमोद्या सो मन वचन कायायें करी ॥ मिछामि डुक्कडं

॥ दोहा ॥

॥ थापन मोसा मैं किया । करी विशवास घात ॥ परनारी धन चोरिया । प्रगट कह्यो नहीं जात ॥ १ ॥ ते मुजे धिक्कार धिक्कार । वारं वार मिछामि डुक्कडं ॥ वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारें मृषा वादका त्याग करुंगा, सो दिन मैरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ २ ॥ त्रीजा पाप अदत्तादान है, सो अणदीधी वस्तु चोरी करीने लीनी ते मोटकी चोरी लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी घर संबंधि नाना प्रकार का कर्त्तव्योमें उपयोग सहित तथा विना उपयोगें अदत्तादान चोरी करी कराइ करतानें अनुमोदी मन वचन कायायें करी तथा धर्म संबंधी ज्ञान, दर्शन, चा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रित्र अरु तपकी श्रीनगवंत गुरु देवोंकी अण आज्ञा बिणायें कस्या ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिछा मि डुक्कडं । सो दिन मैरा धन्य होवेगा जिसदिन सर्वथा प्रकारें अदत्तादानका त्याग करुंगा वो दिन मैरा परम कल्याणका होवेगा ॥३॥ चोथा मैथुन सेवने विषे मन वचन अरु कायाका योग प्रवर्त्ताया, नव वाड सहित ब्रह्मचर्य नही पाल्या, नव वाडमें अशुद्ध पणे प्रवृत्ति हुइ, आप सेव्या अनेरा पास सेवाया, सेवतां प्रत्यें नला जाण्या, सो मन वचन कायायें करी मुजे धिक्कार धिक्कार वारं वार मिछामि डुक्कडं ॥ वो दिन मैरा धन्य होवेगा जिसदिन में नववाड सहित ब्रह्मचर्य शील रत्न आराधुंगा. सर्वथा प्रकारें कामविकार सें निवर्त्तुंगा. सो दिन मैरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पांचमा परिग्रह सो सचित्त परिग्रह तो दास दासी डुपद चउपद प्रमुख मणि पछर प्रमुख अनेक प्रकारका है अरु अचित्त परिग्रह जो सोना रूपा वस्त्र आनरण प्रमुख अनेक वस्तु है तिनकी ममता मूर्छा आपणात करी, क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य परिग्रह अरु चौद प्रकारका अन्यंतर परिग्रहकों राख्यो रखायो राखतानें अनुमोद्यो तथा रा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रिनोजन अनरू आहारादि संबंधि पाप दोष सेव्या ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिछामि दुक्कडं ॥ वो दिन मेरा धन्य होवेगा जिसदिन सर्वप्रकारें परियहका त्या ग करी संसारका प्रपंचसेंती निवर्त्तुंगा सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥५॥ छठा क्रोध पापस्था नक सो क्रोध करीनें अपनी आत्माकूं और परआत्मा कूं तपाइ ॥६॥ तथा सातमा मान ते अहंकार नाव आण्या । तीन गारव आठमदादिक कह्या ॥७॥ तथा आठमा माया पापस्थानक ते धर्म संबंधि तथा सं सार संबंधि अनेक कर्त्तव्योमें कपटाइ करी ॥ ८ ॥ तथा नवमुं लोन ते मूर्छा नाव आण्यो । आशा तृष्णा वांछादिक करी ॥ ए ॥ तथा दशमो राग ते मनगम ति वस्तुशुं स्नेह कीधा ॥ १० ॥ तथा अगीयारमो द्वेष ते अणगमती वस्तु देखीनें द्वेष कह्यो ॥ ११ ॥ तथा बारमुं कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश उ पजाव्या ॥ १२॥ तथा तेरमुं अन्याख्यान ते अछतां आल दीनां ॥ १३ ॥ तथा चौदमुं पैशून्य ते पराइ चुगली कीनी ॥ १४ ॥ पन्नरमुं परपरिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या बोलाव्या अनुमोद्या ॥ १५ ॥ शोलमुं रति अरति ते पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४० ॥ विकार छे तेमां मनगमतीथुं राग कस्यो अणगमतीथुं द्वेष कस्यो तथा संयम तप आदिकने विषे अरति करी कराइ अनुमोदी तथा आरंभादिक असंयम प्रमादमां रति भाव कस्या कराया अनुमोद्या ॥ १६ ॥ सत्तरमुं मायामोसो पापस्थानक सो कपट सहित जूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अढारमुं मिथ्यादर्शन शल्य सो श्रीजिनेश्वर देवके मार्गमें शंका कंखादिक विपरीत प्ररूपणा करी कराइ अनुमोदी ॥१८॥ इत्यादिक इहां अढार पापस्थानोंकी आलोयणा सो विशेष विस्तारें आपसें बने जिस मुजब कहनी ॥ एवं अढार पापस्थानकसो इव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी जानतां अजानतां मन वचन अरु कायायें करी सेव्यां सेवराव्यां अनुमोद्यां अर्थें अनर्थें धर्मअर्थें कामवशें मोहवशें स्ववशें परवशें दीयावा राइवा एगोवा परिसागउवा सूतेवा जागरमाणेवा इनभवमें पहेलां संख्याता असंख्याता अनंता भवांमें भवभ्रमण करतां आजदिन तांइ संवत् १९३९ के महाशुदि सप्तमी तांइ अथवा वर्त्तमान जो संवत महीना तिथि होवे सो कहेनी. इन बखत तांइ राग द्वेष विषय कषाय आलस प्रमादादिक पौजलिक प्रपंच पर गुण पर्यायकी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विकल्प चूल करी, ज्ञानकी विराधना करी, दर्शनकी विराधना करी, चारित्रकी विराधना करी, चारित्राचारित्रकी तपकी विराधना करी, शुद्ध श्रद्धा शील संतोष क्षमादिक निज स्वरूपकी विराधना करी, उपशम विवेक संवर सामायिक पोसह पडिक्कमणा ध्यान मौनादि नियम व्रत पच्चखाण दान शील तप प्रमुखकी विराधना करी, परम कल्याणकारी इन बोलोंकी आराधना पालनादिक मन वचन अरु कायासें करी नही, करावी नही, अनुमोदी नही ॥ तही आवश्यक सम्यक् प्रकारें विधि उपयोग सहित आराध्या नही, पाल्या नही, फरस्या नही, विधि उपयोगरहित निरादरपणे कर्या, परंतु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नही कर्या, ज्ञानका चौद, समकेतका पांच, बारां व्रतका शाठ, कर्मादानका पंदर, संलेषणाका पांच, एवं नवाणु अतिचारमांहे तथा १२४ अतिचारमांहे तथा साधुजीका १२५ अतिचार मांहे तथा बावन अनाचिरणका श्रद्धानादिकमें विराधनादिक जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारादि सेव्या सेवाया अनुमोद्या जानतां अजानतां मन वचन कायायें करी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिछामि दुक्कडं. मैनें जीवकूं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अजीव सद्दह्या प्ररूप्या, अजीवकूं जीव सद्दह्या प्ररू
प्या, धर्मकूं अधर्म अरु अधर्मकुं धर्म सद्दह्या प्ररूप्या
तथा साधुजीकों असाधु और असाधुकों साधु सद्द
ह्या प्ररूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महास
तियांजीकी सेवा भक्ति यथाविधि मानतादिक नही
करी, नही करावी, नही अनुमोदी तथा असाधुवांकी
सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कह्या. मुक्तिका मार्ग
में संसारका मार्ग यावत् पच्चीश मिथ्यात्व मांहेला
मिथ्यात्व सेव्या सेवाया अनुमोद्या मनेंकरी, वचनें
करी, कायायेंकरी, पच्चीश कषायसंबंधी, पच्चीश क्रिया
संबंधि, तेत्रीश आशातना संबंधि, ध्यानका उंगणीश
दोष, वंदनाका बत्रीश दोष, सामायिकका बत्रीश दोष,
पोसह्का अढारा दोष, संबंधि मनें वचने कायायेंकरी जे
कांइ पाप दोष लाग्या लगाया अनुमोद्या ते मुजे धि
क्कार धिक्कार वारंवार मिछामि दुक्कडं ॥ महामो
हनीय कर्मबंधका त्रीश स्थानककों मन वचन अरु
कायासें सेव्या सेवाया अनुमोद्या, शीलकी नव वा
ड आठ प्रवचन माताकी विराधनादिक तथा श्रावक
का एकवीश गुण अरु बारा व्रतकी विराधनादि मन
वचन औ कायासेंकरी करावी अनुमोदी तथा तीन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अशुभ लेश्याका लक्षणांकी अरु बोलांकी सेवना क री, अरु तीन शुभ लेश्याका लक्षणांकी अरु बोलांकी विराधना करी, चर्चा वार्त्ता उगेरामें श्रीजिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या, नही मान्या, अव्रताकी थापना करी प्रवर्त्तायां; व्रताकी थापना करी नही, अ रु अव्रताकी निषेधना नही करी, व्रताकी थापना अ रु अव्रताकी निषेधना करनेका नियम नही कर्या, क लूषता करी तथा ज्ञ प्रकारें ज्ञानावरणीय बंधका बो ल; ऐसेंही ज्ञ प्रकारका दर्शनावरणीय बंधका बोल यावत् आठ कर्मकी अशुभ प्रकृतिबंधका पचावन का रणें करी व्यासी प्रकृति पापांकी बांधी बंधाइ अनु मोदि मनेंकरी वचनेंकरी कायायेंकरी ते मुजे धिक्का र धिक्कार वारंवार मिछामि डुक्कडं ॥ एक एक बो लसें लगा कर कोडाकोडी यावत् संख्याता असंख्या ता अनंता अनंता बोल तांइ में जो जाणवा योग्य बोलकों सम्यक् प्रकारें जान्या नहीं, सरध्या प्ररूप्या नही तथा विपरीतपणे श्रद्धानादिक करी कराइ अनु मोदि मन वचन कायायेंकरी ते मुजे धिक्कार धिक्का र वारंवार मिछामि डुक्कडं ॥ एक एक बोलसें याव त् अनंता बोलमें शंकवा योग्य बोलकों शंक्या नहीं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उनकों मन वचन कायायें करकें सेव्या सेवाया अ
नुमोद्या सो मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिछामि
दुक्कडं ॥ एक एक बोलसें लगा कर जाव अणंता अ
णंता बोलमें आदरवा योग्य बोल आदर्या नहीं, आ
राध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंमनादिक क
री कराइ अनुमोदि मन वचन कायायेंकरी ते मुजे
धिक्कार धिक्कार वारंवार मिछामि दुक्कडं ॥ श्रीजिन
नगवंतजी महाराज आपकी आज्ञामें जो जो प्रमा
द कर्या, सम्यक् प्रकारें उद्यम नहीं कर्या, नहीं करा
या, नहीं अनुमोद्या, मन वचन काया करकें अथवा
अनाज्ञा विषे उद्यम कर्या कराया अनुमोद्या एक अ
क्षरके अनंतमे नाग मात्र दूसरा कोइ स्वप्नमात्रमें
नी श्रीनगवंत महाराज आपकी आज्ञाथुं अधिका उ
ग विपरीत पणे प्रवर्त्त्यो हुं ते मुजे धिक्कार धिक्कार
वारं वार मिछामि दुक्कडं ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रद्धा अशुद्ध परूपणा । करी फरसना सोय ॥
अनजाने पक्षपातमें । मिछा दुक्कड मोय ॥ १ ॥ सूत्र
अर्थ जानुं नहीं । अल्पबुद्धि अनजान ॥ जिननाषि
त सब शास्त्रका । अर्थ पाठ परमान ॥ २ ॥ देव गुरु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धर्म सूत्रकूं । नवतत्त्वादिक जोय ॥ अधिका उंगा जे कह्या । मिछा डुक्कड मोय ॥ ३ ॥ हूं मगसेलीयो हो रह्यो । नहीं ज्ञान रस नीज ॥ गुरु सेवा न करी श कुं । किम मुज कारज सीझ ॥ ४ ॥ जाने देखे जे सु ने । देवे सेवे मोय ॥ अपराधी उन सबनको । बदला देशुं सोय ॥ ५ ॥ गवन करुं बुगचारतन । दरव नाव सब कोय ॥ लोकनमें पगगट करूं । सूईपाई मोय ॥ ६ ॥ जैनधर्म शुद्ध पायकें । वरतुं विषय कषाय ॥ एह अचंना हो रह्या । जलमें लागी लाय ॥ ७ ॥ जितनी वस्तु जगतमे । नीच नीचसें नीच ॥ सबसें में पापी बुरो । फसुं मोहके बीच ॥ ८ ॥ एक कनक अरु कामिनी । दो महोटी तरवार ॥ उठयो थो जिन नजनकूं । बिचमें लीयो मार ॥ ९ ॥

॥ सवैयो कवित्त ॥

॥ में महापापी गांफके संसार गार गारहीका विहार करुं आगला कुठ धोय कीच फेर कीचबिच रहुं विषय सुख चारु मन्न प्रभुता वधारी है ॥ करत फकीरी ऐसी अमिरीकीआस करुं । काहेकुं धिक्कार सिर पगडी उतारी है ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ त्याग न कर संग्रह करुं । विषय वचन जिम आहार ॥ तुलसीए मुज पतितकूं । वारवार धिक्कार ॥ ११ ॥ राग द्वेष दो बीज है । कर्मबंध फल देत ॥ इनकी फांसी में बंध्यो । छूटुं नहीं अचेत ॥ १२ ॥ रतन बंध्यो गठडी विषे । नाण छिप्यो घनमांहि ॥ सिंघ पिंजरामें दीयो । जोर चले कछु नांहिं ॥ १३ ॥ बुरो बुरो सबको कहे । बुरोन दीसे कोय ॥ जो घट शोधुं आपनो । तो मोसुं बुरो न कोय ॥ १४ ॥ कामी कपटी लालची । कठण लोहको दाम ॥ तुम पारस परसंगथी । सुवरन थाशुं स्वाम ॥ १५ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ मैं जपहीन हुं तपहीन हुं । प्रभु हीन संवर समगतं ॥ हे दयाल कृपाल करुणानिधि । आयो तुम शरणागतं ॥ प्रभु आयो तुम शरणागतं ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नहीं विद्या नही बचन बल । नहीं धीरज गुन ग्यान ॥ तुलसीदास गरीबकी । पत राखो भगवान ॥ १७ ॥ विषय कषाय अनादिको । भरियो रोग अगाध ॥ वैद्यराज गुरु शरनथी । पाउं चित्त समाध ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १८ ॥ कहेवामें आवे नहीं । अवगुण नरियो अनं
त ॥ लिखवामें क्युं कर लखुं । जाणो श्रीजगवंत ॥१९॥
आठ कर्म प्रबल करी । नमियो जीव अनादि ॥ आठ
कर्म छेदन करी । पावे मुक्ति समाधि ॥ २० ॥ पथ
कुपथ कारन करी । रोग हानवृद्धि थाय ॥ इम पुण्य
पाप किरिया करी । सुख दुःख जगमें पाय ॥ २१ ॥
बांध्या विण छुटे नहीं । विण छुट्यां न छूटाय ॥
आपही करता जोगता । आपें दूर कराय ॥ २२ ॥
सुसायासें अविवेकहूं । आंख मीच अंधियार ॥ मक
डी जाल बिछाय के । फसुं आप धिक्कार ॥ २३ ॥
सब नरकि जिम अग्नि हुं । तपियो विषय कषाय ॥
अवछंदा आविनीत मे । धर्मी ठग दुःखदाय ॥ २४ ॥
काहा नयो घर छांमके । तज्यो न मायासंग ॥ ना
ग त्यजी जिम कांचली । विष नही तजियो अंग ॥२५॥
आलस विषय कषाय वश । आरंभ परिग्रह काज ॥
योनि चोराशी लख नम्यो । अब तारो महाराज ॥
॥ २६ ॥ आतम निंदा शुद्ध नणी । गुणवंत वंदन जा
व ॥ राग द्वेष उपशम करी । सबसें खमत खमाव
॥ २७ ॥ पुत्र कुपात्रज में हूउं । अवगुण नख्यो अनं
त ॥ याहित बुद्ध विचारकें । माफ करो जगवंत ॥२८॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शासन पति वर्द्धमानजी । तुम लग मैरी दोड ॥ जैसे समुद्र जहाज विण । सूजत और न गोर ॥ २९ ॥ नवभ्रमण संसार दुःख । ताका वार न पार ॥ निर्लो नी सतगुरु बिना । कवण उतारे पार ॥ ३० ॥ नव सागर संसारमे । दीपा श्री जिनराज ॥ उद्यम करी पोहोचे तीरें । बेगी धरम जहाज ॥ ३१ ॥ पतित उद्धारन नाथजी । अपनो बिरुद विचार ॥ नूल चूक सब माह्री । खमीयें वारं वार ॥ ३२ ॥ माफ करो सब माह्रा । आज तलकना दोष ॥ दीन दयाल दी यो मुजे । श्रद्धा शील संतोष ॥ ३३ ॥ देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ । संवर निर्ज्जरा धर्म ॥ केवली नाषित शा सतर । येही जैन मत मर्म ॥ ३४ ॥ इस अपार सं सारमें । शरन नहीं अरु कोय ॥ यातें तुम पद नग तही । नक्त सहायी होय ॥ ३५ ॥ छूटुं पिछला पाप थी । नवा न बंधु कोय ॥ श्रीगुरु देव प्रसादसें । स फल मनोरथ मोय ॥ ३६ ॥ आरंन परिग्रह त्यजी करी । समकित व्रत आराध ॥ अंत अवसर आलोय कें । अनशन चित्त समाध ॥ ३७ ॥ तीन मनोरथ ए कह्या । जे ध्यावे नित्य मन्न ॥ शक्ति सार वरते स ही । पामे शिव सुख धन्न ॥ ३८ ॥ श्री पंचपरमेष्टी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जगवंत गुरु देव माहाराजजी आपकी आग्या है स म्यक् ज्ञान दर्शन सम्यक् चारित्र तप संयम संवर नि र्जरा मुक्तिमार्ग यथाशक्तियें शुद्ध उपयोग सहित आ राधनें पालने फरसनें सेवनेकी आग्या है वारंवार शु न योग संबंधि सद्याय ध्यानादिक अनिग्रह नियम व्रत पच्चरकाणादि करणे करावणेकी समिति गुप्ति प्रमु ख सर्व प्रकारें आग्या है ॥

॥ दोहा ॥

॥ निश्चल चित्त शुद्ध मुख पढत । तीन योग थिर थाय ॥ दुर्जन दीसे कायरा । हलु कर्मी चित्त नाय ॥ १ ॥ अक्षर पद हीणो अधिक । नूल चूक कही होय ॥ अरिहंत सिद्ध आतम साखसें । मिछामि दु क्कड मोय ॥ २ ॥ नूल चूक मिछामि दुक्कडं ॥ इति श्रावक श्रीलालाजी रणजितसिंघजी कृत बृहदालो यणा संपूर्ण ॥

॥ इति बृहदालोयणा समाप्त ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org